पाप की गठरी | By Mukesh Kumar |

नाम हरि का जप ले मुख से
जन्म सफल हो जाए
पाप की गठरी सर पे रख कर
फिरता क्यों पछताए

जीवन उसका जीवन है जो
दुख लेकर सुख बांटे
जैसा भी जो बोए यहां पर
वैसा ही वो काटे

गया समय फिर हाथ न आए
फिर कहे पछताए
पाप की गठरी सर पे रख कर
फिरता क्यों पछताए

देख के ऊंचे महल दो मंज़िल
मन ही मन हर्षाए
सुख में सुमिरन किया कभी न
माया देख लुभाए

दुर्जनों के संग में बैठा
नाम हरि बिसराए
पाप की गठरी सर पे रख कर
फिरता क्यों पछताए

तन धोया मन काला राखे
माया जोर लुभाए
तन छूटे धन काम न आए
माया साथ न जाए

हरि नाम की छोड़ के पूंजी
दर दर भटका जाए
पाप की गठरी सर पे रख कर
फिरता क्यों पछताए

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%aa-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%97%e0%a4%a0%e0%a4%b0%e0%a5%80-by-mukesh-kumar/